Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need to establish a research centre of Yoga and AYUSH in Uttarakhand

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार) ः मैं देवभूमि उत्तराखंड से आता हूँ और यह मेरा परम सौभाग्य है कि इस गरिमामयी सदन में मैं विश्व की योग और अध्यात्म की राजधानी हरिद्वार का प्रतिनिधित्व करता हूं जहां पर संपूर्ण विश्व से लोग योग व अध्यात्म की खोज के लिए आते हैं और उसका आनंद उठाते हैं।

आयुर्वेद अर्थात् आयु का विज्ञान एक शाश्वत चिकित्सा पद्धति है जो न केवल तन का बल्कि मन और मस्तिऐक को स्वस्थ करने की बात करती है। विश्व के 60 प्रतिशत से अधिक लोग पारंपरिक दवाईयों का उपयोग करते हैं। चरकसंहिता और सूश्रूत संहिता में हजारों पादप परिवारों का वर्णन है और मुख्यतः हिमालय ही उनका उद्गम स्थल है। विकसित देशों से 40 प्रतिशत से अधिक लोग जड़ी-बूटी का सेवन करते हैं। भारत की 70 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण जनता आयुर्वेदिक दवाईयों पर निर्भर है। आयुर्वेद की लोकप्रियता पूरे विश्व में लगातार बढ़ रही है। हम सौभाग्यशाली हैं कि प्रकृति ने हमें आयुर्वेद की जड़ी-बूटियों का असीम खजाना दिया है। पिछ्ले कुछ वऐाॅ से आयुऐ क्षेत्र में 20-25 प्रतिशत की विकास दर देखी गई जो कि अत्यंत उत्साहजनक है। उत्तराखंड देवभूमि होने के साथ पर्यावरण की दृऐिट से अत्यंत संवेदनशील राज्य है। जैव विविधता के क्षेत्र में यह विश्व के श्रेऐठ स्थानों व हिमालय से घिरा यह प्रदेश 65 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र से आच्छादित है। ऐसी स्थिति में आयुऐ संबंधी किसी भी महत्वाकांक्षी योजना के लिए स्वाभाविक केद्र है। योग एवं आयुर्वेद में संस्कृत की महता के मद्देनजर हमने उत्तराखण्ड में इसे द्वितीय राजभाऐा बनाकर प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाया है। मेरा संसदीय क्षेत्र हरिद्वार तथा ऋऐिकेऐ विश्व की योग एवं आध्यात्मिक राजधानी है।

अतः मेरा केंद्र सरकार से विनम्र अनुरोध है कि उत्तराखंड में योग और आयुऐ का अंतर्राऐट्रीय शोध संस्थान स्थापित करने की कृपा करें। क्योंकि उक्त शोध संस्थान में योग एवं आयुर्वेद पर शोध के लिए अंतर्राऐट्रीय स्तर के संसाधन जुटाए जाएं और भारत सहित विश्व के मानव का कल्याण हो सकेगा।